HISTORY, B.A. HONS II, Paper II

पिछले Answer से आगे जारी - REIGN OF TERROR (आतंक का शासन)

REIGN OF TERROR STARTED (आतंकवादी शासन का आरम्भ) :—

इस प्रकार विभिन्न अधिकारों से स्वयं को शक्तिशाली बनाने के पश्चात् जैकोबिन दल ने आतंक का शासन स्थापित किया। जैकोबिन दल ने आदेश जारी किया कि जो लोग क्रांति का विरोध करेंगे उन्हें मृत्युदण्ड दिया जायेगा। इस आधार पर हजारों लोगों को गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया। राजपरिवार के अनेक सदस्य, जिरोंदिन दल के सदस्य एवं प्रवासी कुलीनों को मृत्युदण्ड दिया गया। लुई XVI की पत्नी अन्तवायनेत (Queen Antoinette) को गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया। रानी अन्तवायनेत के अतिरिक्त जिन अन्य व्यक्तियों को मृत्युदण्ड दिया गया उनमें प्रमुख थे - ड्यूक ऑफ ऑर्लियन्स, बेली, बीरों, व मादाम रोलां। मादाम रोलां ने गिलोटिन पर जाते समय कहा, "हे स्वतंत्रता, तेरे नाम पर कितने अपराध किये जाते हैं!" ("Liberty! What crimes are committed in thy name!")

आतंक के शासन के काल में जैकोबिन दल के तीन भाग थे, जिनके नेता क्रमशः दांतों, हरबर्ट तथा राबसपीयर थे। इन दलों में पारस्परिक फूट थी। दांतों एवं राबसपीयर ने मिलकर हरबर्ट की हत्या करवा दी और दांतों जैकोबिन दल का प्रमुख बन गया। कालान्तर में दांतों की भी हत्या कर दी गयी एवं राबसपीयर आतंक के शासन का सर्वेसर्वा बन गया।

आतंक के शासन में अनेक स्थानों पर भयंकर विद्रोह हुए, किन्तु उनका कठोरतापूर्वक दमन किया गया। ल्या वेंडी नामक स्थान पर 1800 व्यक्तियों को नदी में डुबो दिया गया। लियान्ज नामक स्थान पर भी भीषण विद्रोह हुआ, किन्तु सेना ने पूरा लियान्ज नगर ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

राबसपीयर की निरंकुशता के कारण धीरे-धीरे उसका विरोध बढ़ने लगा। फ्रांस में प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन संकट में दिख रहा था। कोई नहीं जानता था कि कब किसको संदेह में ही गिलोटिन पर चढ़ा दिया जायेगा। 27 जुलाई 1794 ई० को जब राबसपीयर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाषण दे रहा था, उसके विरोधियों ने उसे घेर लिया एवं उसे और उसके साथियों को बन्दी बना लिया। अगले दिन 28 जुलाई 1794 ई० को राबसपीयर को गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया। राबसपीयर को बन्दी बनाने एवं उसे गिलोटिन पर चढ़ाने की घटना को फ्रांस के इतिहास में "थर्मीडोरियन क्रांति" (Thermidorian Revolution) के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार राबसपीयर की मृत्यु के साथ ही आतंक का राज्य समाप्त हो गया।

→

Causes for the end of the Reign of Terror (आतंक का शासन समाप्त होने के कारण):—

आतंक के शासन के दौरान फ्रांस की जनता को अत्यधिक अत्याचारों का सामना करना पड़ा। सौभाग्य से, यह शासन अल्पकालीन ही रहा। इसके पतन के लिए निम्नलिखित प्रमुख कारण थे:-

(i) जैकोबिन दल में फूट आतंक के शासन के पतन का मुख्य कारण था। इसी कारण से जैकोबिन नेता स्वयं को एक-दूसरे की हत्या करने लगे। दांतों एवं राब्सपीयर ने हरबर्ट की हत्या कराई। राब्सपीयर ने दांतों को गिलोटिन पर चढ़ा दिया।

(ii) जैकोबिन दल के नेताओं द्वारा आपस में ही हत्याकाण्ड करने से जैकोबिन दल के सदस्य भी भयभीत होने लगे। उन्हें स्वयं भी यह भय होने लगा कि उन्हें भी कभी भी मृत्यु-दण्ड दिया जा सकता था।

(iii) आतंक का शासन जनता की इच्छा के विरुद्ध कायम किया गया था।

(iv) इस शासन के द्वारा क्रांतिकारी स्वयं ही क्रांति विरोधी कार्य कर रहे थे। अतः इसका पतन निश्चित था।

(v) अधिक दिनों तक शक्ति के द्वारा किसी भी देश पर शासन नहीं किया जा सकता। अतः आतंक के शासन का पतन स्वाभाविक था।

(vi) फ्रांस ने अनेक देशों से संधियाँ कर बाह्य आक्रमण के खतरे को टाल दिया था। जनता का विचार था कि अब आतंक के शासन की आवश्यकता नहीं थी।

अतः उपरोक्त कारणों से आतंक के शासन का पतन हो गया।

Evaluation of the Reign of Terror (आतंक के शासन का मूल्यांकन):-

आतंक के शासन के दौरान अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये गये। जिस समय फ्रांस में आतंकवादी शासन की स्थापना की गयी थी फ्रांस की आंतरिक एवं बाह्य स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। आतंक के शासन ने फ्रांस को संगठित करने के साथ ही शांति की भी स्थापना की। फ्रांस में राजतंत्र समर्थक निरन्तर गणतन्त्र का विरोध कर रहे थे। इस शासन ने गणतंत्र-विरोधियों का सफाया कर फ्रांस में गणतंत्र को दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया। आतंक के शासन के दौरान युद्ध मंत्री कार्नो ने सेना को संगठित एवं शक्तिशाली बनाया, जिसने फ्रांस को प्रथम संगठन (First Coalition) के हाथों अपमानित होने से बचाया।

इसके पश्चात् भी भी आतंक के शासन की कटु आलोचना इतिहासकारों के द्वारा की गयी है। ऐसे इतिहासकारों ने इस शासन को फ्रांस के इतिहास पर धब्बा बताया है तथा इसकी तुलना के क्रूरतम कालों से की है। इतिहासकारों द्वारा इस प्रकार का वर्णन करने का एक प्रमुख कारण यह है कि आतंक के शासन का यूरोप के अन्य देशों ने घोर विरोध-

किया था, क्योंकि उन राज्यों में राजतंत्र कायम था। अतः आतंक के शासन के दौरान पश्चात् जितने भी ग्रन्थ अन्य देशों के इतिहासकारों ने लिखे, उनमें इसकी कटु आलोचना की गयी। इसके अतिरिक्त आतंक के शासन के दौरान उच्च वर्ग के लोग ही सर्वाधिक प्रताड़ित किये गए थे, अतः आतंक के शासन की अधिक आलोचना हुई।

इतिहास साक्षी है कि सदैव निर्धन वर्ग ही अत्याचारों का शिकार होता आया है, किन्तु आतंक के शासन के दौरान उच्च वर्ग को प्रताड़ित किये जाने के कारण तीव्र प्रतिक्रिया हुई। वास्तव में, आतंक के शासन में निम्न वर्ग के लोगों को न तो गिलोटिन पर चढ़ाया गया और न ही उन्हें किसी प्रकार से परेशान किया गया, अपितु इससे जनसाधारण ने स्वयं को सुरक्षित अनुभव किया था। अतः आतंक के शासन की आलोचना का उचित एवं तर्कसंगत नहीं है। तत्कालीन परिस्थितियाँ ही इस प्रकार की थीं जिसमें कठोर शासन के अभाव में फ्रांस में शांति एवं व्यवस्था की स्थापना करना सम्भव न था। राइकर ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए लिखा है, "यह एक साधारण एवं असंवैधानिक शासन तन्त्र था। ऐसा होना आवश्यक भी था, क्योंकि यह अनुभव किया गया कि ऐसे समय (संकटकालीन) में सरकार के हाथ संविधान से बंधे हुए नहीं होने चाहिये।"

S. V. Anil
29.7.2020